पवित्रता की सरिता बहाकर श्रेष्ठ कर्मों में प्रवृत होने की प्रबल प्रेरणा दी है दादी प्रकाशमणि ने

माउंट आबू, 4 सितम्बर, प्रजापिता ब्रह्माकुमारी ईश्वरीय विश्व विद्यालय की मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी जानकी ने कहा है कि दादी प्रकाशमिण ने अनेकों के जीवन में पवित्रता की सरिता बहाकर उन्हें श्रेष्ठ कर्मो में प्रवृत्त होने की सक्षम प्रेरणाएं दी है। उनकी बेहद सेवा की मानसिक वृत्ति के परिणाम स्वरूप ही समाज को नई दिशा देने की सेवाओं ने तेजी से विस्तार को पाया है। वे संगठन की पूर्व मुख्य प्रशासिका दिवंगत राजयोगिनी डॉ दादी प्रकाशमणि के लिए ओम शान्ति भवन के सभागार में आयोजित श्रद्वाजंलि सभा में उपस्थित जनसमुदाय को संबोधित कर रही थीं।

उन्होंने कहा कि राजयोगिनी दादी प्रकाशमणि ने जीवन भर सद्भावना, राष्ट्रीय प्रेम और मानवीय एकता की प्राचीन भारतीय संस्कृति को जन-जन तक पहुंचाने में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। उन्होंने आध्यात्मिक क्रान्ति से समाज को नवीन विचार धारा से जोड़ने का पुनीत कार्य किया है। जिसे हम सबको आगे बढ़ाने के लिए आगे आना होगा।

उपखंड अधिकारी डॉ. रविकुमार सुरपुर ने कहा कि दादी जी के कुशल दिशा निर्देशन में ब्रह्माकुमारी संगठन की महान कार्यप्रणाली ने निरन्तर प्रगति के पथ का अनुष्ठान करते हुए मनुष्य की पशुत्व प्रवृत्तियों को समाप्त कर उसमें देवत्व को जागृत करने की सामाजिक आवश्यकता की भावनाओं को बल दिया है। दादी जी ने तेजी से बदलते परिवेश को आध्यात्म की परिधि में बांधकर मानव समुदाय को स्वार्थी भावनाओं से मुक्त रहने की प्रेरणा दी है।

आंतरिक सुरक्षा अकादमी के निदेशक नागेंद्र सिंह ने कहा कि वैज्ञानिक प्रगति के युग में दादी जी ने भारतीय प्राचीन सभ्यता के अनुरूप अनेकों के जीवन को राजयोग से निखारा है, तपस्वी बनाया है, पुरातन व महान संस्कृति और सभ्यता से सींचा है। ऐसी महान परम्परा के वारिसों को समाज को मूल्यनिष्ठ बनाने की अहम जिम्मेदारियों को निभाने में सक्षम बनाया है। निच्छल स्नेह, सहयोग, सहानुभूति, सहृदयता संपन्न करूणामयी दादी जी के जीवन में समाज को बेहतर बनाने की समर्पणता की भावना कूट-कूट कर भरी हुई थी।

संगठन की अतिरिक्त मुख्य प्रशासिका राजयोगिनी दादी हृदयमोहिनी ने कहा कि दादी जी की जीवनशैली से दिव्यगुणों की महक आती थी जिससे हर कोई उनके सानिध्य में आने से दिव्य अनुभूति करता था। न दुःख दो, न दुःख लो, खुश रहो और खुशी बांटो यह स्लोगन वे सबको पक्का करवाती थीं। जिसे सहर्ष रूप से सभी स्वीकार करते थे।

पालिकाध्यक्ष जालमगिरी ने कहा कि दादी जी के कुशल प्रशासन में ब्रह्माकुमारी संगठन ने महिलाओं का एक ऐसा विशाल विश्वव्यापक संगठन तैयार कर दिया जो भारतीय आध्यात्मिक परम्पराओं को विश्व में फैलाने के महत्वपूर्ण कार्य के साथ-साथ नैतिक, आध्यात्मिक एवं मानवीय मूल्यों की शैक्षणिक सेवाओं द्वारा देश के नागरिकों के चरित्र निर्माण करने में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। ग्राम विकास प्रभाग की अध्यक्ष बी. के. मोहिनी बहन ने कहा कि दादी जी का जीवन चैतन्य दैवी मूर्ति समान था। धर्म, जाति-पात के भेदभाव से ऊपर उठकर उनके द्वारा की गई सेवा सैदव फलीभूत हुई है।

लायंस क्लब के सदस्य, पूर्व स्वास्थ्य निदेशक डॉ. ज्ञान प्रकाश ने कहा कि दादी जी का कम बोलो, धीरे बोलो, मीठा बोलो स्लोगन सदा कानों में गूंजता रहता है। जिसे हमें दिल से स्वीकार करना चाहिए। संगठन से जुड़े भाई-बहनें प्राचीन राजयोग के ज्ञान और आधुनिक विज्ञान के अद्भुत समन्वय के आधार पर पुराने आदर्शों को अपना समाज परिवर्तन की चरम पराकाष्ठा पर पहुंचने में निरन्तर प्रयासरत हैं। रोटरी क्लब अध्यक्ष रतनदेवासी ने कहा कि समाज में पिछले सैंकड़ों वर्षों से चली आ रही परम्परा के अनुसार महिलाओं को जो द्वितीय श्रेणी में रखा था दादी जी ने उन्हें आगे लाने का जो चुनौतीपूर्ण उत्तरदायित्व अपने मजबूत कन्धों पर लिया वह सराहनीय ही नहीं बल्कि अनुकरणीय भी रहा। जिसके लिए समस्त महिला जगत के लिए दादी प्रकाशमणी जी का जीवन एक आदर्श और उदाहरणमूर्त रहा।

मीडिया प्रभाग के उपाध्यक्ष बी. के. करूणा भाई ने कहा कि दादी जी ने विशेषकर पथभ्रष्ट, दिशाविहीन युवावर्ग में सहज राजयोग की शिक्षाओं के माध्यम से सहयोग, सहानुभूति और सद्भाव का वातावरण उत्पन्न करते हुए उनमें विश्व सेवा की काबलियत भरी है। खेल प्रभाग की राष्ट्रीय संयोजिका बी. के. शशि बहन ने कहा कि दादी जी ने नैतिकता व आध्यात्म के बल पर युवाओं में आत्म विश्वास, स्वाभिमान और उनके दायित्वों को जागृत कर उन्हें राष्ट्र निर्माण में स्वयं की शक्ति, श्वांस, समय एवं संकल्पों का सकारात्मक सदुपयोग करने को प्रोत्साहित किया। बी. के. मुन्नी बहन ने कहा कि ब्रह्मा बाबा द्वारा रोपे गए छोटे से पौधे को सरलचित, करूणामयी दादी ने वटवृक्ष के रूप में समस्त विश्व में फैला दिया है। इस अवसर पर श्रद्वाजंलि सभा में बड़ी संख्या में उपस्थित लोगों ने दिवंगत दादी जी के चित्र पर श्रद्वासुमन अर्पित कर उन्हें भावभीनी श्रद्वाजंलि दी।